सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली — श्री साई शके : 30

अंक – 110 — दिसम्बर – 2011

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

AA Å¡AA Jh IkbZukFkk; ue% AA

AA Å¡AA Jh Inx~:ukFk nknk; ue%AA

गुरूबंधु भगिनियों से,

इस गुरूमार्ग के कार्य का मूलभूत कारण, "शक्तिपीठ स्थापना" का जब साकार हो रहा था तब वं. दादा जी ने भक्तों को जो बोध देकर मार्गदर्शन किया जिसके पहले भाग में शक्तिपीठ मलतब क्या है और दूसरे भाग में हम भक्तों की इस शक्तिपीठ के प्रति, कार्यकेन्द्र के प्रति किस प्रकार की सोच या कैसी भूमिका होनी चाहिए, इसके बारे में बताया। वह इस प्रकार है :

o; nknk th ds y¶tks e; %

"यह शुभमंगल योग जो आपने देखा या जिसका अनुभव आप ले रहे हैं, ऐसा सुनहरा दिन इस संसार में पहली बार हुआ है। इस विश्व के कार्यकाल में (Life time) ऐसा सद्गुरू का आसन, शक्तिपीठ पहला ही है। ऐसा मैं क्यो कह रहा हूँ? आज गोमांतक में, इस देश में सैकड़ों मन्दिर है। वे सभी शक्ति के पीठ है। उन शक्ति के पीठों में और इस शक्तिपीठ में जिसकी स्थापना आज सद्गुरू साईनाथ महाराज जी के आज्ञा से की है, इनमें क्या फर्क है ?

आज तक इस त्रिभुवन में जितने पीठ है, वे स्थापना होने के बाद भक्तगणों के माध्यम से उन पीठ के प्रति जो श्रद्धाभाव व्यक्त हुआ उसी से वह पीठ जागृत हुए। कोई भी मन्दिर में जिन देवदेवताओं की स्थापना सैकड़ों सालों से आप करते आ रहे हो, उन शक्तिपीठों की स्थापना के दौरान जो कोई भी प्रतीक की (मूर्ति की) स्थापना की गई वह करने के बाद भक्तगणों ने अपने श्रृद्धा भक्ति का अविष्कार उस पीठ पर समर्पित किया और तभी वह पीठ साक्षात् हुए। यह पीठ उसके उलटा (Opposite) है। यह शक्तिपीठ स्थापना करने के लिए क्या मेहनत की जो पिछले दो तपों से आप भक्तगणों में दीक्षांत विधि करके, एक ही नामःस्मरण देकर, पिछले पच्चीस सालों में भक्तों की वाणी से सिर्फ "ऊँ श्री साईनाथाय नमः" इसके अलावा दूसरे कोई भी जप का, मंत्र का या नामःस्मरण

का उच्चार नहीं किया गया। आप भक्तों ने दीक्षांत विधि की यह महत्वपूर्ण चीज ध्यान में लेकर, परसों के बत्तीस शिराला के पंचमी तक नामःस्मरण से एक शक्ति संगठित की। भविष्य में आपके और आपकी भावी पीढ़ीयों के कल्याण के लिए आवश्यक शक्ति का उपयोग कर बाकी सभी शक्तियाँ इस शक्तिपीठ में स्थापित है। मतलब भविष्य में आने वाले भक्तों को यहाँ सिर रखकर, या यहाँ अपनी भक्ति समर्पण कर के यह पीठ जागरूक करने की आवश्यकता नहीं है। यह अन्तर जगत के अन्य मन्दिर, प्रार्थनागृह और इस शक्तिपीठ में है। इस प्रकार का शक्तिपीठ पहला ही है, मतलब पहले भक्तों के माध्यम से दो तप शक्ति संचय किया और ऐसी संचित की हुई शक्ति भक्तों के कल्याण के लिए इस्तेमाल कर बाकी की शक्तियाँ शक्तिपीठ में अन्तर्भूत की।

पृथ्वी की उत्पत्ति करोड़ों साल पहले हुई और आज करोड़ों साल के बाद पृथ्वी के गर्भ में (पेट में) शक्तिपीठ की स्थापना की गई। मानव को अपने जीवन में जिस चीज की जरूरत होती है उसे ऋद्धी, सीद्धी और समृद्धी कहते है। यही पृथ्वी का धर्म है, जिसे हम (Force of gravity) कहते हैं। मतलब हम लोग जो कष्ट करते हैं उसे उर्जितावस्था प्राप्त करा देना, यही कार्य पृथ्वी निसर्गतः कर रही थी। लेकिन उसके गर्भ में जो तेजतत्व था वह हमने अपने अधर्मी और अनुचित आचार और विचारों से, उस तेज तत्व का उपभोग लेकर पृथ्वी के गर्भ में खालीपन (empty space –पोकूली) निर्माण किया है। हमारा देश तो कृषी प्रधान देश है लेकिन आज पृष्ट भाग पर जो खेती बाड़ी है, वे सभी प्रदेश की जमीन उपजाऊ थी पर आज बंजर हो गई है। क्योंकि आज तक केमिकल फर्टिलाईजर के बिना खेती नहीं होती। पृथ्वी का तेज तत्व हमने शोषण कर लिया है। यह एक भाग हुआ; दूसरा भाग मतलब पृथ्वी के वातावरण में जो माक्रोवेव है, उसमें असंख्य कृत्रिम रेंज छोड़कर वह वातावरण दूषित कर दिया।

आप पृथ्वी पर प्रतिकात्मक (मूर्ति) पीठ की स्थापना करके श्रृद्धाभाव से उसमें शक्ति आह्वानित करके पृथ्वी के पेट में आप व्हायब्रेशन की निर्मिती नहीं कर सकते लेकिन ये शक्तिपीठ कैसा है, यह तो जब कोई भूकम्प होता है तब उसका मूलभूत स्थान पृथ्वी केन्द्र बिन्दु होता है। उससे सम्पूर्ण धरतीमाता के पेट में कम्पन निर्माण होते है और वह पृष्ट भाग पर (SURFACE) आकर व्हायब्रेशन्स वातावरण में जाते है। इसी तत्व पर यह शक्तिपीठ, सद्गुरू का आसन पृथ्वी के गर्भ में स्थापित किया है; यह शक्ति भविष्य में पृथ्वी की प्रदक्षिणा करेगी। आज हमने यह पीठ, अपनी माता है, उसके गर्भ में स्थापित क्यों किया? क्योंकि उसने आजतक हमारी सेवा, हमें अन्न, वस्त्र, निवारा देकर की है, लेकिन उनके लिए हमने कोई बलिदान नहीं दिया। जितना खा सके, पी सके, जितना उपभोग ले सके उतना लिया; लेकिन उसका ऋण हमने चुकता नहीं किया। इसलिए वे कैसी हो गई, तो अपने ही बच्चों का पालन पोषण करने के लिए असमर्थ हो गयी। क्योंकि आपका पालन पोषण करने की उसकी इच्छा होने के बावजूद भी उसके पेट में जो माया थी, ममता थी, वह आपने निदर्यी दिल से खाकर उस पर पशुवत (पशु की तरह) रहने लग गये। उसका कर्ज नहीं चुकाया। वह कर्ज मेरे सद्गुरू माऊली को चुकाना पड़ा। ऐसा विधी, ऐसी सिद्धता करने के लिये, सद्गुरू आसन को शक्ति पीठ में स्थापना करने के लिए मेरे माध्यम से जो कार्य सद्गुरू ने किया, उसके लिये मुझे इसी जनम में चार जनम लेने पड़े। पहला जनम मुझे मेरे माता–पिता ने दिया और कार्य के लिए अब तक तीन जनम हुए। पहला 1964 साल में जो अटैक आया वह। फिर सब विमोचित हो गये तब क्या करना पड़ा? विमोचनों से आपके कुटुम्बों का उद्धार हो इसलिये माता–पिता ने जो यह देह दिया था उससे आत्मा को बाहर निकालना पड़ा और मृत होना पड़ा फिर ईच्छा शक्ति से और गुरू के आशीर्वाद से देह में उस आत्मा को वापस लेना पड़ा और यह देह नया करना पड़ा। नये संकल्प के लिये पुराने संकम्प का देह उपयोगी नहीं होता। इसलिये फिर दीक्षांत विधी किये। लघुरूद्र के दौरान एक पूर्णिमा के समय 15 दिन मैं अस्वस्थ था, वही यह दूसरा जनम था। और कुछ दिन पहले बत्तीस शिराला में जो शक्ति सब ने संघटित की है वह आपके माध्यम से जुड़ जाने के लिए खुद का देह मृत करके मैं दस दिन दवाखाने में सो रहा था। इस प्रकार जगत कल्याण के लिए मैंने अब तक चार जन्म लिए। अब इस चौथे जनम में कार्य करना है। अब, "मेरे लड़के के लिये यह लड़की योग्य है क्या?" "मेरे लड़के को प्रमोशन कब मिलेगा/गाड़ी कब मिलेगी" इस प्रकार के सवाल आपने पूछना मतलब इसके जैसी बेशरमी की दूसरी कोई बात नहीं। मेरी तरफ उस नज़र से देखो की सप्त लोक तक कैसे पहुँचना है। इतने मामूली और गंदे सवाल लेकर आप मुझसे मिलने के लिए नहीं आना। अब मैं इतना सस्ता नहीं।

माँ के कोख से जनम लेने के बाद जगत्कल्याण के लिए मैंने तीन जनम लिए, जरा सोचिये, आज तक दस रूपये उधार देने हो तो आप विचार करते हैं, अब सोचो की मैंने तो प्रारम्भिक अवस्था से यह जीवन बलीदान के लिए लाया हूँ। इसके आगे मेरा उपयोग किसी प्रकार के मामूली सवाल–जवाबों के लिए न करें। इस प्रकार के अनेक शक्तिपीठ इस विश्व में निर्माण हो, इस विचार के लिये करना जरूरी है। इन पीठों का आध्य पीठ गोमांतक में प्रस्थापित हुआ यह गोमांतक में रह रहे वासीयों का सौभाग्य है। आप भक्त लाखों रूपया खर्च करके इमारत खड़ी कर सकते है लेकिन उस इमारत में इस प्रकार के भी शक्तिपीठ लाखों रूपया देकर भी आप खरीद नहीं सकते। तीन पंथ और सम्पूर्ण विश्व कार्य की योजना इनका अंतभाव करके यह पीठ सद्‌गुरू ने आपको स्थापना कर के दिया है। भविष्य में ऐसे अनेक पीठों की जरूरत विश्वशांति के लिए होंगी। तो एक महत्वपूर्ण सवाल यह है कि इस पीठ में क्या नहीं है? गुरू मार्ग में जो सेवा करनी होती है, उस सेवा की यह अंतिम साधना परमेश्वर के और आप सभी के प्रेम की वजह से साकार हुई है। आजतक बिना संकोच किये, आपके सुख–दुःख का निवारण करने के लिए, मैं अहर्निश (दिन–रात) आपके पिछे खड़ा रहा; भविष्य में आपको मेरे पीछे खड़ा रहना है। "मेरे बेटी की शादी कब होगी?" इत्यादि प्रकार के प्रश्न निवारण करने के लिए आपको सद्‌गुरू ने समर्थ किया है। अब "इस प्रकार का सवाल पूछना मतलब गुरू का अनादर करना है" यह विचार किये बिना हाथों में लिये हुआ यह कार्य हम कर नहीं सकेंगे। आज सबने देखा क्या? की ताम्बे के पत्रे पर, बाबा के चौरंग के नीचे यह शक्तिपीठ है। सभी को दिख रहा है क्या? यह बीच में ऊँकार है – अ. उ. म. यह चार कोने में चार स्वास्तिक मतलब दस दिशा में और यह पृथ्वी। आया की नहीं बराबर। तीन ऊँकार और तीन अ.उ.म । 'म' तत्व की शुद्धता, सांगता जो गोकर्ण में होनी थी वह बत्तीस शिराला मतलब कष्हाड में हुई, मतलब गोरक्षनाथ जी के चरणों में। इसमें गोरक्षनाथ मतलब सभी पंथों के आद्‌यगुरू, यह अर्थ है। हर एक मनुष्य को जनम प्राप्त होता है और मरने के बाद उसकी चुटकी भर राख होती है। सामान्य आदमी से करोड़पती आदमी तक, सभी की राख चुटकी भर होती है। लेकिन मनुष्य ने ऐसा विचार करना चाहिये कि सम्पूर्ण जीवन में हमने कुछ भी प्राप्त किया जो भी आखिरी में अपने जीवन की जो राख (रक्षा) है, वह तो अपने पश्चात लोगों के कल्याण के लिये उपयुक्त हो; इसका अर्थ है गोरक्षनाथ। आज आप सब यहाँ बैठे है लेकिन कोई भी अजरामर नहीं, कोई भी अमर नहीं। आपके प्रति पूज्यता सिर्फ आपके बाल बच्चों को है। इसलिए आपकी अस्थी, रक्षा विसर्जित होने के बाद भी, जिस गुरूकृपा का लाभ आपने लिया उसका अस्तित्व आपके कुटुम्ब कल्याण के लिए अपने परिवार में रखना जरूरी है। अस्थी चाहे तो गंगा में समर्पण करना लेकिन आपके जीवन की राख से अपना परिवार खाक में जाये ऐसा होने मत दिजीये। मेरे जीवन का एक अंश सद्‌गुरू कृपाशीर्वाद से राख हुआ लेकिन भक्तगण लाख होंगे। ऐसी प्रेरणा आपके राख से निर्माण होनी चाहिए। परिवार को खाक करने के लिए मैं जनम को नहीं आया हूँ और न ही मरूंगा। मेरे जैसे गुरूभक्त मेरे परिवार में एक लाख हो।

यह स्थान ऐसा है कि, इस स्थान की पवित्रता रखने का कर्त्तव्य अब आप में से हर एक व्यक्ति ने करना चाहिये। आज तक मैं आपसे कोई भी स्वार्थ न रखकर प्रामाणिक (Honest) रहा, अब आपको भी उतना ही प्रमाणिक रहना है। मैं एक दिन में लखपती हो सकता था, सच्चे माईने में गुरूकृपा से वह मुमकिन होने के बावजूद भी मैंने प्राध्यान्य किसको दिया? अपनी गुरू की परम्परा को। इस परम्परा के साथ रहकर आपको अपना जीवन भविष्य में व्यतीत करना है।

बाबा का फोटो चौरंग पर है, उसके निचे 2 अप्रैल को यहाँ स्थापना होगी तब यह पीठ तैयार होगा।

अब आप मेरे पास एक संदेश लेकर आ गये कि, "पणजी में (पुराने केन्द्र पर) रहने वाले भक्तों के लिए वहाँ पर कोई एक फोटो रखो, तो वहाँ नमस्कार करने के लिए लोग आ गये तो चलेगा क्या? इस प्रकार की सुविधा (arrangement) भक्तों के लिये मुझसे मत पूछिये। मेरे चार जनम और इससे पहले लिए हुए कई जनमों की पुण्याई, सिर्फ आप लोंगो का कल्याण हो इसलिये खर्च कर दी और फिर आखिरी में यह पीठ तैयार हुए; अब लोगों की गैर सोच (गैर विचार या परेशानियाँ) हो रही है इसलिये भाड़े की वस्तु में मेरा यह शक्तिपीठ रखना मुझे मंजूर नहीं।

यह वास्तु होने से पहले मेरी मनोकामना ऐसी थी कि, भीख मांग कर, पाँच घर माधुकरी मांग कर जिस प्रकार औंदुबरं साधना/सिद्धता की गई , वैसे ही इस शक्तिपीठ की स्थापना के लिए घर–घर में एक–एक पैसे की भीख मांगनी पड़ती थी तो वो भी मैंने मांगी होती; लेकिन मेरी माऊली ऐसी समर्थ है कि मुझे किसी के सामने हाथ फैलाना नहीं पड़ा। मेरी इच्छा अनुसार और अपेक्षा अनुसार यह सब (शक्तिपीठ) खुद उन्होंने किया। इसमें मेरा कुछ भी नहीं है। किसी को भी आना है तो यहाँ पर आये। अब तो आपको निराकरण भी पूछने का कारण नहीं है। सामने जो "ऊँ" है उसके ठीक निचे श्री साईनाथ महाराज जी की प्रतिष्ठापना होती है। उसके सामने जो शक्तिपीठ है वह किसके लिये किया है? श्री ज्ञानेश्वर महाराज जी ने क्या कहा, "जो जे वांच्छील तो ते लाहो प्राणी जात" आसमान में पंछी है, जमीन पर प्राणी है, भूगर्भ में प्राणी है, सभी की जरूरतों की पूर्णता यहाँ की गई है। तीनों लोकों में महत्वपूर्ण ऐसा यह सुवर्ण दिन बाबा की आज्ञा से और कृपा से हमने मनाया इसके बारे में चार शब्द मैंने आपको बताये।

शिर्डी में बाबा का आगमन द्वारकामाई में हुआ। आज शिर्डी में जो बाबा की समाधि है, वहाँ हजारों भक्त जाते है, पाँव छूते है, मन्नतें मांगते है। वहाँ बाबा की अस्थी है लेकिन हस्ती नहीं है, उनका अस्तित्व नहीं है। अस्तित्व मतलब बाबा का कार्य। वह अस्तित्व का पीठ आज यहाँ स्थापित हुआ। यहाँ तीन शक्तियों की स्थापना की है – उत्पत्ती, स्थिती, लय जो सम्पूर्ण त्रिभूवन को हिला सकती है। इस शक्तिपीठ के सामर्थ्य का अन्दाज क्या आप अपनी इच्छा शक्ति एक करके भी कर सकते हैं? नवनाथों के काल में नाथ जब धरणी पर चलते थे, तब धरणी में कम्पन्न होते थे; क्यों? क्योंकि हर एक कदम उठाकर धरणी पर रखते समय उनके अलौकिक सामर्थ्य का तोल इतना था कि पृथ्वी में भी कम्पन्न होते थे। यहाँ जब नाथों का संचार हुआ था; तब मैं स्नान करके आया था, तब आपने देखा था की कदम कैसे पड़ रहे थे। उस प्रकार का काल निर्माण करना है। धरणी माता को भी यह शक्ति सहन नहीं होती थी। मतलब विश्व के कल्याण का तरणोपाय यह ईश्वर के हाथों में नहीं तो हमारे हाथों में हैं, यह सिद्ध हुआ।

अब यह बताते समय ऐसा कहा कि साधना सिद्धता करते समय जनम लेने पड़े, इसका कोई शास्त्र है क्या? जो पातंजली के सूत्रों में जो योग बताये है उसमें इसका शास्त्र है। आज योगासन का अध्ययन आप करते हैं, किसलिये? पेट में दर्द है, सीर में दर्द है, पेट साफ नहीं होता, कमर में दर्द रहता है इसके लिए योगासन सीखते है। पांतजली सूत्र में योग ऐसा है कि, जनम प्राप्ती के बाद, ईश्वर की उपासना इस प्रकार से करनी है कि, आत्मा को अपने देह के बाहर निकाल कर पूछना है कि, "तुम्हारा उपयोग मैं इस देह में कर रहा हूँ। खा–पी रहा हूँ, आराम कर रहा हूँ, तो तुम्हे कैसा लग रहा है?" ये आत्मा को कौन पूछेगा ? अपना देह पूछेगा। यह पातंजली सूत्र का योग है कि प्राप्त जनम के देह से आत्मा को विभक्त करना होता है और फिर पूछना है कि, "मैं जो कुछ सद्गुरू सेवा या नित्य उपासना या दान–धर्म, परोपकार कर रहा हूँ, उससे कुछ मुक्ती प्राप्त हो रही है क्या?" ऐसा जो सुख संवाद है वह पांतजली सूत्र योग है। यह एक शास्त्र और दूसरा शास्त्र मतलब नवनाथ में भी श्री मच्छिंद्रनाथ जी को जब लड़का हुआ "मीननाथ" तो उन्हें नाथों की दीक्षा देनी थी। वह जो माँ के कोंख से जनम को आया था उसको अन्दर से धो दिया और उसकी आंतडी को (Intestine) सुखाने मे लिऐ रखी मतलब पहला जनम मृत किया; तभी जो नाथपंथ की दीक्षा है वह उसमें (मीननाथ में) कार्य करती है। उसी का रिपिटेशन मतलब विमोचन के जो कुछ विधी सेमिनार में बताये वह आपको दीक्षा देने के पहले या आपके लिये कोई एक विधी करने से पहले सद्गुरू को संकल्प करना होता है। वह एक संकल्प अगर देह में है तो अगला संकल्प सिद्ध नहीं हो पाता। इसीलिये देह मृत करना होता हैं और फिर अगला संकल्प करना होता है। पहला विमोचन का संकल्प किया जिससे यह बर्तन (देह) खराब हो गया। पहले दिन दूध बर्तन में लिया, लेकिन दूसरे दिन दूध लेने के लिए बर्तन साफ करना चाहिये। इसी प्रकार यह देह मृत करना पड़ा, फिर जिन्दा होना है, फिर नया संकल्प करना, वह भक्तों को देना और फिर मृत होना। ऐसी यह पुर्नावृत्ति कितनी बार हुई? मां ने जनम देने के बाद कप्हाड की दीक्षा देने तक चार जनम हुए। इन चार जनमों में जो कुछ साध्य करना था वह अन्य व्यक्ति को प्राप्त करने के लिये सौ जनम भी कम है। तभी यह शक्तीपीठ तैयार हुई है। सौ जनम एक ही गुरू से एकनिष्ठ रहना चाहिए। इसीलिये सेमिनारों में हाजी

बाबा ने कहा की, “अब आप लोगों को देने के लिये मेरे पास बाकी कुछ नहीं है। और आप लोगों को मेरे पास मांगने के लिए कोई बाकी नहीं है। इसके बाद आप कुछ मांगोगे तो इसका मायना यह है कि जनम को आते वक्त आप दरिद्री थे वैसे अभी भी गुरू मिलने के बाद है।”

o- nknk th dk ekxZn'kZu % Hkäksa dh@lsodksa dh dk;Z ds çfr Hkfedk dSlh gks----

शक्तिपीठ स्थापना आपके सह–कार्य से हुई। इसके लिए जिस शक्ति का अनुग्रह मुझे प्राप्त हुआ था वही दीक्षा मैंने आपको दी। गुरू और भक्त ऐसा रिश्ता खत्म होकर अब आप मेरे गुरूबंधू हो गये हो। अब आपको शक्ति का पूजक किया है। पूजन लेने का मेरा अधिकार अब खतम हो गया। गुरूमार्ग में यह करना होता है। शिष्यों को विकसित करके उन्हें शक्ति से जोड़ना और खुद बाजू हो जाना; यह किया तो ही कार्य निरंतर स्वरूप में चलता है। इसके बाद में पूजन, गुरूदक्षिणा, हार, फूल इत्यादि नहीं लूंगा। अब उत्सव के दिन गुरूशक्ति का आसन लगाकर उसका पूजन आपने करना है। यह कार्य जगत के अंत तक चालू रहने के लिए आसन सिद्धता मैंने करके रखी है। शिष्य अगर कोई व्यक्ति स्वरूप गुरू से जुड़ गया तो पूर्णतः नहीं कर सकता, ऐसा सिद्धांत है (यानि गुरूशक्ति से जुड़ना पड़ता है।) यह कार्य श्री साईनाथ महाराज जी की कृपा से साकार हुआ। उनके पास क्या है, इसका ज्ञान किसी को भी नहीं हुआ। शिर्डी अब “एहिक शिर्डी” बन गई हैं वहाँ से लोग भर–भर के ले जा रहे है लेकिन समाधान नहीं है। शक्तिपीठ यह बाबा की परमार्थिक शिर्डी है। विश्व का शक्तिपीठ स्थापना करके मैंने उनको “जगतगुरू” इस पद पर बिठाया है। अब आप मुझे कहाँ बिठायेगें? मुझे बिठाने के लिए इस त्रिभूवन में कोई भी जगह नहीं है क्योंकि त्रिभूवन की शक्तियाँ मैंने एक रूप करके रखी हैं। फिर मुझे आप कहाँ स्थान देंगे? आप भक्त मुझे सिर्फ अपने ह्रदय में स्थान दे सकते हैं। इसके लिए आपकी हर एक कृति काया–वाचा–मन को एकरूप कर के होनी चाहिये। अब आपको कर्म परत्वे जीने का कारण नहीं है। जो कर्माधीन अवस्था थी, उसका स्थित्यंतर कर्म–अधीन अवस्था में किया है। अब जीवन के कर्त्तव्य की पहचान होकर, धर्मपरत्वे जीना मतलब कृपापरत्वे जीना है और कर्म कार्यार्थ व्यतीत करना है। इसमें से औरों को जो सुख शांती मिलेगी वह आपका कर्म, ऐसा जीवन सद्‌गुरू ने आपको प्राप्त करके दिया है। सिर्फ “ओरों का कल्याण” इसकी शुरूआत खुद के कुटुम्ब से है, यह ध्यान में रखना हैं। मैं अब जन्म जन्मांतर में कार्य कर रहा हूँ इसलिए कामकाज नहीं कर सकता। सभी साधन सिद्धता अब आपके हवाले कर दी है; “जाणणे नेणणे तव पायी वाहणे”, अब आगे का कार्य आपको करना है।

अब आने वाले भक्तों को जितना अनजाने में दोगे, सहजता से दोगे उतना ही सहजता से आप सद्‌गुरू के नजदीक जाओंगे। इसके लिये व्यसनों का त्याग करना पड़ेगा। क्योंकि अब खुद के सुख का विचार करने के बदले “आज का मेरा आचरण इस गुरू मार्ग को पोषक है या नहीं?” यह विचार करना है। “जिनकी कृपा से सेवक अवस्था प्राप्त हुई, उनको में किस प्रकार समाधान दे पाऊँगां?” यह संभालना है । आज मेरी अवस्था विकट हो गई है। सुफी पंथ ठीक था, उसमें पच्चीस साल रम गया था (खो गया था), उन्होंने लाड़ प्यार दिया, लेकिन अब नाथ पंथ अनुसरण करना है। और वह सिर्फ मेरे लिए नहीं तो आपको भी वह प्राप्त करके देना है ; इसके लिए उस अवस्था से झगड़ना पड़ता है क्योंकि आप लोग उसके लिए लायक नहीं हैं। लेकिन उसके बावजूद वह आपको प्राप्त कर देनी है, क्योंकि यह कार्य निरंतर चलाना है। किसी प्रतिकूल कर्म से झगड़ने के सौ गुना ज्यादा शक्ति इसके लिए लगती है। यह अवस्था गतिमान है; आप रूक गये तो भी वह रूकने वाली नहीं है। आज आपने, “मैं दादा को कैसे सहकार्य दे सकता हूँ और इसके लिये मेरे आचार–विचार में क्या बदलाव ला सकता हूँ?” इसका विचार करना आवश्यक है। आपकी देहिक अवस्था जन्म कर्म पर निर्भर है। आलस किया तो वह रूक जायेगी। लेकिन जब देहिक माध्यम गुरूशक्ति पर निर्भर होता है तब रूक नहीं सकता क्योंकि गुरूशक्ति निसर्ग के आधीन है। उसके अनुसार देह का बर्ताव होना चाहिये। कार्य को आपकी जरूरत है इसलिसे मैं आपकी मर्जी सम्भालता हूँ। लेकिन अब आप भक्त न होकर “मध्यस्त” है, इस जिम्मेदारी से रहना चाहिये। आपको गुरू के प्रति आत्मविश्वास नहीं लेकिन मुझे आपके ऊपर है। उससे बड़ा सौभाग्य क्या है? कल मैं नहीं हुँगा तब भी यह कार्य नहीं रूकेगा। क्योंकि ईश्वरीय कार्य मध्यस्तों के माध्यम से होता है। यह कार्य मेरा नहीं; तो ईश्वर का है। उसने कृपावंत होकर मुझे इसमें समा लिया; मैंने आपको समा लिया। अब धागा, धागा अखंड सिलाना है; क्योंकि संसार को कृपा का वस्त्र देने के लिए

एक धागा काफी नहीं है। अनेक धागे चाहीये। इसका अर्थ यह कार्य एक के माध्यम से नहीं होगा; यही भावना आप सेवकों को रखनी है। केन्द्र पर जो सेवक है, उन सभी को साथ में आकर एक ही सद्भावना से यह कार्य करना है; तभी ही आपके जीवन का सार्थक होगा। ऐसा मौका बारबार नहीं मिलने वाला; इसका ज्ञान देहत्याग के पश्चात ही होगा लेकिन तब दुःख करके उसका कोई उपयोग नहीं होने वाला।

जो दुःखी आया है, उसको परमार्थिक मार्ग प्राप्त करके देना है, लेकिन यह प्रवचन देकर नहीं होने वाला। आने वाले भक्तों के मन का भाव लेना आना चाहिए। मतलब उसके दुःख से समरस होना चाहिये। 'परमार्थ' यह विषय सहजता से उसके जीवन में धारण हो, इसके लिए 'चित्त' यह अवस्था धारण करनी जरूरी है। और उसके लिये 'मन' यह अवस्था का पूरी तरह विकास होना जरूरी है। मन का विकास संयम और सहनशीलता के बगैर नहीं प्राप्त होता। अब आपके इस अवस्था में चीजें मन के हिसाब से नहीं होगी। ऐसे समय पर क्रोध पर संयम रखकर सहनशीलता बढ़ाई तो ही मन का विकास होगा। इसके लिये नाथपंथ में शिष्यों को तीर्थाटन, देशाटन करने के लिए भेजते थे। क्योंकि प्रवास करने से सहनशीलता बढ़ती है। **'चित्त' यह आध्यात्म का माध्यम है।**

शक्तिपीठ की स्थापना करते समय मुझे 'शास्त्र–शस्त्र–अस्त्र और 'तंत्र–मंत्र–यंत्र' इनका विचार करना पड़ा। इसमें "मैं अधिकारी हूँ। मुझे शास्त्र अनुसरने की जरूरत नहीं" ऐसी सोच नहीं चलती। अपने से कोई तो श्रेष्ठ है यह मानने के बाद ही मैं निकलता है और नम्रता, सेवाभाव तथा भाव निर्माण होता है। इस प्रकार नहीं सोचा तो अहंकार नहीं जाता है और "हममें दुर्गुण होने के बावजूद श्री गुरू ने हमें अपने पास बिठाया" इसको जाने बिना औरों के प्रति ममता निर्माण नहीं होती।

इतनी गुरूकृपा प्राप्त होकर, दीक्षाओं का लाभ अत्यंत आसान तरीके से हुआ है; अब विकास कर लेना यह आपका फर्ज है। आपको वैयक्तिक रूप से कोई भी साधन सिद्धता नहीं करनी है; तो दैनंदिन साधना करके समुहिक आरती और अनुष्ठान साधना करने का मार्गदर्शन किया है। आरतीयों में श्री पतंमहाराज जी का शब्दब्रम्ह तो है ही लेकिन उसके अलावा श्री गोरक्षनाथ जी की आज्ञा से नाथपंथों की सद्धिता इन पदों में सिद्ध कर दी है। मतलब आरती करते समय विमोचन और दीक्षा इनका कार्य आपके देहिक माध्यम में होगा। इतना आसान मार्ग श्री गुरू ने प्राप्त करके दिया हैं। हम ईश्वर को मिलने की याचना करते है; लेकिन खुद ईश्वर ने अपने आप मिलने के लिए आना मतलब 'अनुष्ठान' है। सामुदायिक अनुष्ठान से एक दूसरे के माध्यम की कमतरता दूर होती है। अधिकार प्राप्त हुआ तो सहनशीलता कम होती जाती है वैसे न होने देकर एक दूसरों की कमियाँ निकाले बिना अगर आरती और अनुष्ठान का लाभ नियमित रूप से लिया तो 'मन' इस अवस्था का विकास होकर, आध्यात्म का जो माध्यम है, "चित्त" उसका लाभ आपको होगा। वह हो गया तो ईश्वर के जो गुण है, दया, क्षमा, शांति वे आपके माध्यम से व्यक्त होगें। यह अवस्था आपको प्राप्त करनी है।

शुभं भवंतु

जनम् जनम् का सेवक
श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था

FAITH FOUNDATION

Faith is based in Jaipur and its sole motto is to bring a ray of hope amongst the lives of children living with HIV+, by providing care and support. As HIV has taken on epidemic proportions, there are a numerous single or double orphans, who are also HIV infected.

Faith admits such children into its 'Aalingan' care home, where they are given the comforts of a cosy home. The inmates, mostly from Rajasthan's

hinterland are recommended by the Sawai Man Singh Hospital, Jaipur. As the social stigma attached with HIV makes these children outcastes in the society they had earlier lived in, the Faith Foundation endeavors to integrate these children into the mainstream by providing them with education and an opportunity for cultural and social activities, so that they can lead normal life and fulfill their potential.

Founded in 2005 by Smriti Singh, the focus of the Faith Foundation is to provide care, support healthcare to these children and to generate greater awareness about HIV. The Foundation is dedicated to inspiring others to make a difference in the lives of these children.

Aalingan' is visited by volunteers from India and abroad, who spend their summer months and pre-job breaks at the care home, interacting and playing with the children.

कुछ प्रश्न व एक अर्ज़ी

क्या है जिसे हम भक्त कहते हैं
कौन देता है जिसे हम शक्ति कहते हैं?

क्या जरूरत है आदमी को इबादत की
कौन है पूंजी बेहंतिहा रूहानी मुहब्बत की?

क्यों कहीं आज ये ज़लज़ला उभरता है
ज्वालामुखी ज़मी को फोड़ कर दहकता है?

क्यों कोई राजा कोई भिखारी है
क्यों दुःखों की तमाम ये दुनिया आज मारी है?

क्यों कोई कांटों पे भी बेखौफ हो के सोता है
जबकि मख़मल के गद्दों पे भी कोई
नींद अपनी खोता है?

कहीं अनजान चेहरे भी सुकूँ देते हैं
कभी लख्तें जिग़र चैनों सुकूँ लेते है

यह सवाल ज़हन में सभी के तो कौंधा करते हैं
दिन रात यह शख़्सियत को सबकी रौंदा करते हैं

सदियों से इंसान इन्हीं बातों पे लड़ा करते हैं
मज़हब के नाम से वो कत्ले आम करते है

पूंजी और कुंजी इन सवालों की
मन के पर्दे में ही तो बसा करती है
जिसको यकीन तुझ पे हो जाये
रोशनी उसको यकायक ही नज़र आती है

मार्ग सच्चाई का वैसे तो बड़ा दुर्गम है
इसपे चलने की ताकत तो तुझ ही से आती है

सवाल इतने हैं कि जिनके जवाब नहीं
मस्ले इतने है कि कोई हिसाब नहीं

मैं जो भवसागर में तैरता एक कतरा हूँ
तेरी बदौलत इन सवालों से दूर बैठा हूँ

जिस दिन से नाव तूने मुझे जन्मों की दे डाली है
तभी से पिछले कर्मों व दोषों की पेटी बिल्कुल खाली है

मेहनत, मुशक्कत व कर्म सारे ही
करवाता तू है पर नाम मेरे आते हैं

जो सवाल व ईनाम मुझको मिलता है
उसे खाते मेरे सदियों तलक दर्साते हैं

हीरे जवारात तो महज़ कार्बन के कतरे हैं
ऐशो आराम तो बस जिस्म ही को मिलते हैं

यह बात जिस दिन से समझ में मुझको आई है
न यश फैलता है मेरा कहीं न कोई रूस्वाई
गुरूर छोड़ के यह मन का कमल खिलता है
झुका जो सर तो तेरे दर से ही जा मिलता है

शुक्रिया तेरा अदा करने को लफ्ज बन पाते नहीं
जिन अल्फाज़ों से तू खुश हो वे मुझे आते नहीं
तेरा की अंश हूँ मैं मालिक, यह करम तेरा है।
अर्ज़ी बस इतनी है वहाँ रख जहाँ रहन तेरा है

अपने उस्ताद व माँ आप की नसीहत
पे खरा कर मुझको
ज़र्रा तेरा हूँ जहाँ चाहे बिठा दे मुझको
परस्ती बुत की करूँ शिवाले में
या आज़ान मस्जिद में
खिदमद इंन्साँ की हो मुझसे यह सिला दे मुझको

खिदमत इंन्साँ की हो मुझसे यह सिला दे मुझको...

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@mail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible